

विचार बिन्दु

सब इंद्रियों को वश में रखकर सर्वत्र समत्व का पालन करके जो दृढ़-अचल और अचिन्त्य, सर्वव्यापी, स्वर्णीय, अविनाशी स्वरूप की उपासना करते हैं, वे सब प्राणियों के हित में लगे हुए मुझे ही पाते हैं।

—भगवान कृष्ण

नौकरी, चाकरी और जोकरी (मसखरी) में विकृति वृद्धि पर

देश में बेरोजगारी की समस्या सदा से रही है, कभी-कभी इसका हो-हल्ला ज्यादा मचता है और कभी कमा लेखक की राय में स्वतंत्रता के बाद यह समस्या बढ़ी है। बचपन में लेखक का समय गाँव में ही बीता है और वह भी स्वतंत्रता के पूर्वा। गाँव में ऐसा बहुत कम सुनने में आता था कि युवा बेरोजगार हैं। हाँ, निश्चित ही शिक्षा का प्रचार-प्रसार कम था। प्राथमिक, उच्च प्राथमिक स्तर के व्यक्ति को भी शिक्षक या क्लर्क की नौकरी सरलता से मिल जाती थी। यहाँ मानिये कि सामान्यतः बिना स्कूली शिक्षा के पढ़े-लिखे, शिक्षित लोगों को नौकरी मिल जाती थी। गाँव में भूखें मरते किसी को नहीं देखा। निष्कर्ष यह है कि देश में स्वतंत्रता के बाद हमारी शिक्षा नीति और आर्थिक नीति जिम्मेदार थी। बड़े-बड़े उद्योग धंधों को प्रारंभ करने के साथ गाँवों की आत्मनिर्भरता पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया गया। चीन का उदाहरण है कि उसने गाँवों में कोई न कोई छोटा-मोटा उद्योग प्रारंभ किया कि उन्होंने उसी उद्योग में महारत प्राप्त कर और उत्पाद बढ़ा कर चीनी वस्तुओं से सारे विश्व को चीनी उत्पाद से भर दिया। इसके विपरीत भारत में ऐसा कोई प्रयास नहीं हुआ।

महात्मा गांधी की बुनियादी शिक्षा में गाँवों को आत्म निर्भर बनाने की भावना थी, परंतु उसे सतही तौर पर लागू किया गया और उसकी भावना को न समझ कर धीरे-धीरे बंद कर दिया। मानव जीवन की संपूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति गाँव में हो जाती थी। मात्र कुछ वस्तुओं, उच्च शिक्षा तथा चिकित्सा के लिये नगर की ओर भागना पड़ता था। लेखक उदयपुर जिले के ऊंटाला (वल्लभनगर) गाँव में रहता था, 50 किलोमीटर पर उदयपुर शहर था। पहले ऊंटाला से मावली जंक्शन तक पैदल, बैलगाड़ी, घोड़ा, ऊंट, तांगा आदि से जाते और वहाँ से उदयपुर की ट्रेन थी। बाद में ऊंटाला का नाम वल्लभनगर हो गया और मावली तक भी ट्रेन संपर्क हो गया। लेखक की ससुराल भी डेट चम्बल के बीहड़ के गाँव रैपुरा में थी, 1-1/2 किलोमीटर पर जैतपुर कस्बा था, उससे 8-10 किलोमीटर पर बाह तहसील और 50 किलोमीटर पर आगरा जिला मुख्यालय है। इस प्रकार इन सुदूर अंचल के ग्रामीण क्षेत्रों में भी कभी कोई असुविधा नहीं हुई। शहरीकरण की अंधी दौड़ में गाँव उड़ड़ व बरबाद हो गये। आत्मनिर्भर भारत का सपना बड़ी-बड़ी चीजों के अलावा गाँवों में वास्तव में साकार हो रहा था।

गाँवों में किसान थे और वे आबादी के 80 प्रतिशत थे एवं आत्मनिर्भर थे। लुहार, सुधार, कुम्हार, स्वर्णकार, किराना, कपड़े के व्यापारी, नाई, बारी, धोबी, सफाईकर्मी, मजदूर, किसान सभी एक-दूसरे पर निर्भर थे और घोर भाईचारा था। चूड़ीगर, जुलाहे व अन्य दुकानदार मुस्लिम समुदाय से भी होते। सभी प्रेम से रहते। शादी-ब्याह, सुख-दुःख में एक-दूसरे की मदद करते। शिक्षा ऐसी होती थी जो इसी ग्राम की आत्मनिर्भरता में उपयोग हो जाती। परंतु 75 वर्षों में शिक्षा ने श्रम की निष्ठा खोई, श्रम साध्य कार्यों से दूर किया। लोग कृषि व मजदूरी को हेय समझने लगे। केवल सफेद कॉलर व्यवसाय और नौकरी की चाह बढ़ने लगी, इसी चाह में शहर की ओर भागना प्रारंभ हुआ। विज्ञान और तकनीक की सही शिक्षा से ही गाँव

आजकल अभिनय और राजनीति दोनों क्षेत्रों में जोकरों-मसखरों का प्राधान्य होता जा रहा है।

राजनीति में माहिर राजनेता स्व.राजनारायण ने गांधी के विरुद्ध चुनाव लड़कर प्रसिद्धि प्राप्त की थी। वे केन्द्रीय मंत्री भी रहे। ऐसे राजनेता तो हमें स्वीकार हैं, परंतु ऐसे शीर्ष राजनेता जो अनावश्यक व असमय अपने विरोधियों के गले मिलें या आँख बिचकायें एवं समय-असमय कुछ भी कहें, देश व समाज में हास्यास्पद ही बनते हैं। नुकसान ही करते हैं-अपना भी, समाज का भी और राजनीति का भी।

धुक चाकरी, धन-धन है व्यापार। आशय यह कि खेती में धन है या वह धन्य है, क्योंकि कृषक अन्नदाता है चाकरी में व्यक्ति स्वतंत्र नहीं है, जबकि कृषि और व्यापार में वह स्वतंत्र है। कृषि और व्यापार में अपनी इच्छानुसार कार्य करने की बहुत छूट है, जबकि 'चाकरी' तो 'मालिक' की इच्छानुसार करनी होगी। नौकरी के साथ चाकरी का अर्थ वर्तमान संदर्भ में निष्ठा व ईमानदारी तथा निष्पक्षता के बजाय अंध राजनीतिक प्रतिबद्धता से हो गया है। इस अंध राजनीतिक प्रतिबद्धता में उचित-अनुचित, सही-गलत का विवेक नहीं रहता। मात्र वह कार्य जो सत्ता का समर्थन, सत्ता के स्थायित्व और स्वार्थ सिद्धि में सहायक हो वही अपील हो जाता है। इसमें राजनेताओं और नौकरशाही में एक दुर्भि संधि हो जाती है और यह दुर्भि संधि नाना रूपों से भ्रष्टाचार को जन्म देती है। नौकरशाही के तंत्र के एक पुर्ज के रूप में नौकर सत्ता की सही रीति-नीति का क्रियान्वयन करने यह तो उचित है। परंतु चाकरी में अंध राजनीतिक प्रतिबद्धता में राजनेता व नौकर मिलकर जनता का शोषण करने लगते हैं। हमें ऐसा तंत्र विकसित करना है जो नौकरी करे परंतु चाकरी नहीं।

नौकरी-चाकरी की ललक के साथ एक नई जमात इस देश में मसखरों की बढ़ रही है। नौकर-चाकर तो भ्रष्टाचार फैला रहे हैं तो ये मसखरे इस देश के सम्मान को घोर क्षति पहुंचा रहे हैं। मसखरे हर काल में रहे हैं। नाटक में इसे विदूषक कहते हैं। जब वातावरण काफी उदास, दुखांत तथा गंभीर हो जाता है तो मसखरे बनाम विदूषक का प्रवेश होता है। अंग्रेजी में इसे 'जोकर' कह सकते हैं। सर्कस में भी 'जोकर' हुआ करता है। जोकर का कार्य बड़ा कठिन होता है। सामान्यतया वह सबसे निपुण अभिनेता या पात्र होता है। आजकल अभिनय और राजनीति दोनों क्षेत्रों में जोकरों-मसखरों का प्राधान्य होता जा रहा है। राजनीति में माहिर राजनेता स्व.राजनारायण ने श्रीमती गांधी के विरुद्ध चुनाव लड़कर प्रसिद्धि प्राप्त की थी। वे केन्द्रीय मंत्री भी रहे। ऐसे राजनेता तो हमें स्वीकार हैं, परंतु ऐसे शीर्ष राजनेता जो अनावश्यक व असमय अपने विरोधियों के गले मिलें या आँख बिचकायें एवं समय-असमय कुछ भी कहें, देश व समाज में हास्यास्पद ही बनते हैं। नुकसान ही करते हैं-अपना भी, समाज का भी और राजनीति का भी।

फिल्म जगत में राजकपूर एक ऐसे सफल अभिनेता थे जिन्होंने गंभीर अभिनेता के साथ एक सफल हास्य अभिनेता के रूप में भी प्रसिद्धि प्राप्त की। उन्होंने एक फिल्म 'जोकर' भी बनाई थी जो काफी प्रसिद्ध हुई। वे स्वयं पर हास्य करके दूसरों को हंसाते पर कभी दूसरों की भावना को आहत नहीं करते। जॉनी वॉकर भी प्रसिद्ध हास्य अभिनेता रहे हैं। परंतु आजकल हास्य अभिनेताओं की एक नई जमात का उदय हुआ है जो देश और समाज का अपमान कर प्रसिद्धि प्राप्त करना चाहते हैं। ऐसे ही एक अभिनेता हैं 'वीरदास'। वे वीर हैं नाम से, काम से नहीं। ये विकृत मानसिकता और दासता के शिकार हैं। ऐसे लोग विदेशों में लोकप्रियता हेतु कहते हैं कि भारत ऐसा देश है जहाँ पुरुष दिन में महिलाओं का आदर दर्शाते हैं और रात्रि में उन पर बलात्कार करते हैं। आराम यह कि भारत बलात्कारियों और चरित्रहीनों का देश है। क्या विदेश में जाकर अपने देश की बुराई करना उचित है? यही नहीं कुछ वरिष्ठ राजनेताओं ने भी उनके सुर में सुर मिलाया। एक वे हैं जो देश के शिक्षा मंत्री रहे और दूसरे वे जो पाश्चात्य रंग में रंगे हुए हैं। हालाँकि एक बुद्धिमान राजनेता ने इससे असहमति प्रकट की। हमें इस कुत्सित जोकरी की भर्त्सना कर निरस्तहित करना चाहिये।

—अतिथि सम्पादक,
केलाश विहारी वाजपेयी,
(स्वतंत्र चिंतक व लेखक)

राशिफल

बुधवार 1 दिसम्बर, 2021

मार्गशीर्ष मास कृष्ण पक्ष, द्वादशी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत् 2078, चित्रा नक्षत्र सायं 6:47 तक, सौभाग्ययोग रात्रि 8:44 तक, कौशल करण दिन 12:55 तक, चन्द्रमा आज प्रातः 7:45 पर तुला

पंडित अनिल शर्मा राशि में प्रवेश करेंगे।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृश्चिक, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-तुला, बुध-वृश्चिक, गुरु-कुम्भ, शुक-धनु, शनि-मकर, राहु-वृष, केतु-वृश्चिक राशि में।

आज राजयोग सायं 6:47 तक है। श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:34 तक, शुभ 10:17 से 12:16 तक, चर 2:52 से 4:11 तक, लाभ 4:11 से सूर्यास्त तक। राहुकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 7:02, सूर्यास्त 5:29

मेघ
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बढ़ेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

वृष
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। मित्रों/रिश्तेदारों से चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। विवाहित मामलों से राहत मिल सकती है। नवीन कार्य संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा।

वृश्चिक
धार्मिक-मांगलिक कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। शुभ कार्य पर धन खर्च हो सकता है। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक यात्रा ठीक रहेगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

कर्क
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में आपसी वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा।

मकर
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। चलते कार्यों में प्रसिद्धि होगी। आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

सिंह
परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। विवाहित मामलों से राहत मिल सकती है।

कुंभ
अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। व्यावसायिक कार्यों में आगे अडचनें दूर होने लगेंगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

मीन
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। धन खर्च पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा।

जीवन के तीन रंग: आपको कौन-सा रंग पसंद है?



जीवन को अपने अनुसार जिया जाए। आमतौर पर देखा गया है कि जो प्रसिद्ध हो, धनी हो, बड़े मकान में रहता हो, लंबी ऊंची कार रखता हो, अच्छे विदेश में शिक्षा प्राप्त कर रहे हो तो लोग कहते हैं कि बंदा बड़ी शानदार जिंदगी जी रहा है पर क्या वास्तव में यह सच है? या फिर सब बाबीं गुड़िया वन फिर रहे हैं। बकील निदाफ़ज़ली:—बाहर से गुड़िया हंसे, भीतर पोलमपोल गुड़िया से है प्यार तो, टांकों को मत खोलो।

धन, बल और प्रसिद्धि सुविधाएं दे सकते हैं, लेकिन इस बात की कोई गारंटी नहीं है कि इनसे सुकून भी हासिल हो जाएगा। बड़े-बड़े धनिक, बड़े-बड़े राजा सम्राट, नामी-गिरामी लोग ऐसी जिंदगी जी कर गए हैं जिसमें उन्हें कभी भी पूर्णता का एहसास नहीं मिला। एक समय की प्रसिद्ध हिंदी फिल्म अदाकारा मीना कुमारी उन्होंने अपनी जिंदगी को अपनी एक रचना में सिर्फ चंद शब्दों में समेटा है: "सांस लेने को तो जीना नहीं कहते प्यार"।

मोटे तौर पर देखें तो ये जीवन के तीन तरह के अंशज हमें अपने चारों तरफ नजर आते हैं। एक तरफ तो काम ही काम, पैसा ही पैसा। दूसरी तरफ निष्क्रिय साहस, भ्रमण और जीवन को जानने की ललक। तीसरा जो है वह मध्य मार्ग है। जीवन की जिम्मेदारियों को पूरा किया जाए, सामाजिक और परिवारिक पूर्णता प्राप्त की जाए और उसके बाद में

जाते हैं कि कोई अकेला व्यक्ति चाहे कितने ही मेहनत करे, वह जीवन की सामान्य सुख-सुविधाएं तो अर्जित कर सकता है, धनकुबेर नहीं बन सकता है। ऐसा सोचना ही नादानी है और तकरीबन पूरा जीवन ही बिना जिए समय के गर्भ में समा जाता है। जो दूसरा उदाहरण है वह कई माने में ठीक है पर कुछ अन्य मापदंडों पर खरा नहीं उतरता है। इस तरह का जीवन तभी संभव है जब या तो आप वैराग्य का जीवन जीने का साहस रखते हों या पुरतैनी तौर पर आपको आर्थिक संपन्नता विरासत में मिली हो वरना जीवन की विकटता और निरुत्तरता आप का इंतज़ार कर रही होती है।

जो तीसरा उदाहरण है नीरजा बिड़ला का, वह एक संतुलित जीवन है। अपनी जिम्मेदारियां पूर्ण की, अपने जीवन को विकसित किया और उसके बाद में अपनी इच्छाएं पूरी की लेकिन इसके लिए एक विशिष्ट स्थिति का होना आवश्यक है कि आपके लिए धन का उपाजन कोई और लोग करें। जो अति धनिक लोग हैं वे आबादी का एक बहुत थोड़ा-सा प्रतिशत होते हैं जहां लोग कॉर्पोरेशन बना कर काम करते हैं। इन लोगों के लिए हजारों दूसरे लोग काम करते हैं और उनके श्रम के फलस्वरूप ये लोग जिंदगी को दूसरे व्यक्तियों से अलग तरह से जीने की क्षमता रखते हैं। इन लोगों का मुख्य कार्य योजना बनाना, उसके लिए धन की व्यवस्था करना और योजना को सफल बनाना है। धन कुबेर ऐसे ही लोग बन सकते हैं बाकी की मंजिल धनी हो जाने तक सीमित होती है।

वैसे देखा जाए तो दुनिया के हर प्राणी का जीवन को जीने का अपना-अपना अलग अंशज होता है। मानव जीवन के लिए देखा जाए तो धन-संपत्ति का संरक्षण एक अति प्रमुख आकर्षण होता है पर धन भी आवश्यक है और

कार्य करना भी जरूरी है मगर किस हद तक और किस कीमत पर?

मनुष्य जीवन का कोई न कोई विशिष्ट उद्देश्य होना चाहिए उद्देश्य बड़े छोटे हर तरह के होते हैं। जिस समाज की वजह से आपने धन कमाया, नाम कमाया, सुख-सुविधाएं भोगी तो एक समयपरंतु कुछ हिस्सा वापस भी समाजोपयोगी कार्यों में लगाओ। जीवन में यदि आपने अनुभव इकट्ठे किए तो उसकी पूंजी भी उम्र के एक मोड़ पर आकर चारों तरफ बांटो, एक जीवन दर्शन विरासत में मिली हो वरना जीवन की विकटता और निरुत्तरता आप का इंतज़ार कर रही होती है।

यद रहे सिर्फ नारे लगाने से, जोर-जोर चीखने से देश का निर्माण नहीं होता है। देश या समाज का निर्माण सदा ही छोटी-छोटी बातों से अपने चारों तरफ परिवर्तन लाने पर ही होता है। सबको धन, मान-सम्मान, ज्ञान प्राप्त करने में अधिकार है और उस की कोशिश भी करनी चाहिए, लेकिन यह सब हमारे आसपास के जीवन को समझने की कीमत पर नहीं होना चाहिए।

हर सफल और संपन्न व्यक्ति के जीवन में वह मोड़ जरूर आता है जब उसको महसूस होता है कि धन और सफलता के माने अब उसके जीवन में वैसे नहीं रहे जैसे प्रारंभिक अवस्था में थे। बेहतर जिंदगी जीने के लिए हमें उस मोड़ को, उस परिवर्तन को पकड़ना होता है। पर हम उससे आगे निकल जाते हैं और फिर एक ऐसे भटकाने में चले जाते हैं जहां से हम वापस जीवन में लौट नहीं पाते या फिर लौटने के लिए बहुत देर हो चुकी होती है।

डॉ. रामावतार शर्मा,
चिकित्सक एवं लेखक

पानी पिलाने वाली सहायककर्मी को ईईएन ने हाथों से पिलाया पानी

राजगढ़, (निर्स) अलवर कस्बे के जेवीबीएएल सहायक अभियंता कार्यालय में 38 वर्षों तक के विभागीय कर्मचारी अधिकारियों के साथ आमजन को पानी पिलाने वाली सहायक कर्मचारी सरियम को सहायक अभियंता दीपक शर्मा ने अपने हाथों से पानी पिला कर सहायक कर्मचारी की सेवानिवृत्ति को यादगार बना दिया। पिनान निवासी सहायक कर्मचारी सरियम पत्नी सुभान पिछले 38 वर्षों से सहायक अभियंता कार्यालय राजगढ़ में कार्यरत रही। इस दौरान अधिकारी एवं आमजन को पानी पिलाने में अपने हाथों से पानी पिला कर सहायक कर्मचारी की सेवानिवृत्ति को यादगार बना दिया। पिनान निवासी सहायक कर्मचारी सरियम पत्नी सुभान पिछले 38 वर्षों से सहायक अभियंता कार्यालय राजगढ़ में कार्यरत रही। इस दौरान अधिकारी एवं आमजन को पानी पिलाने में अपने हाथों से पानी पिला का नाम शौकीन बताने के अलावा कुछ और नहीं बता पाया। जानकारी मिलने के बाद महेश ने सादलपुर रेलवे पुलिस बल के सिपाही कर्मपाल चौधरी को इस बारे में जानकारी दी। कर्मपाल इससे पहले भी उत्तर प्रदेश के कई लापता व्यक्तियों को उनके

उत्तरप्रदेश से आए मंदबुद्धि युवक को परिजनों से मिलाया

सादलपुर, (निर्स) उत्तर प्रदेश के शामली जिले से भटक कर आए हुए एक मंदबुद्धि युवक को उसके परिजनों तक पहुंचाकर स्थानीय आरपीएफ कॉस्टेबल कर्मपाल चौधरी तथा वेवड गांव के इंजिनियर महेश ने मानवता का परिचय दिया।

सोनु नाम का मंदबुद्धि युवक दो रोज पूर्व वेवड गांव में पहुंचा। तथा उक्त युवक को गांव में महेश ने देखा। पूछताछ पर वह अपने बारे में पूरा विवरण नहीं दे पाया। इंजीनियर महेश ने उसे घर पर रखा। प्रयास करने पर पता लगा कि युवक शामली जिले के गांगौर गांव निवासी है तथा अपने पिता का नाम शौकीन बताने के अलावा कुछ और नहीं बता पाया। जानकारी मिलने के बाद महेश ने सादलपुर रेलवे पुलिस बल के सिपाही कर्मपाल चौधरी को इस बारे में जानकारी दी। कर्मपाल इससे पहले भी उत्तर प्रदेश के कई लापता व्यक्तियों को उनके



तीन माह पूर्व घर से लापता मंदबुद्धि युवक की पहचान कर उसके परिजनों को सुर्पुद किया।

परिजनों तक पहुंचा चुका है। कर्मपाल ने दिन रात एक कर शामली आरपीएफ को इतला पहुंचाई। इसके बारे में पूरी जानकारी मिल सकी। मंगलवार को सोनु के पिता शौकीन तथा भाई मोहन डेवड पहुंच गए, जहां पर तस्दीक तस्ली करके के बाद युवक को परिजनों के सुर्पुद कर दिया। परिजनों ने बताया कि सोनु तीन माह से लापता चल रहा था। उसकी खोज करने के बाद भी इसका पता नहीं लग पाया। इस बारे में पुलिस रिपोर्ट भी की हुई है।

बैलगाड़ी से पहुंची बरात, देखने वालों की भीड़ लगी

परंपरा को जीवित रखने और पर्यावरण को बचाने का संदेश दिया

भीलवाड़ा, (निर्स) आधुनिक दौर में जहां दूल्हा पक्ष के लोग लंगरी गाड़ियों से दुल्हन के दरवाजे पर बारात लेकर पहुंचते हैं वहीं मंगलवार को दूल्हा व गुर्जर बारातियों को बैलगाड़ी में बैठाकर दुल्हन के घर जा पहुंचा। इस दृश्य को देखने के लिए लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी। इस दौरान लोग अपने मोबाइल में सेल्फी लेते नजर आए

बता दे कि दूल्हा अपनी पुरानी परंपरा को जीवित रखने और पर्यावरण को बचाने के लिए बैलगाड़ी से बारात लेकर दुल्हन के घर तक पहुंचा। यह बारात आसीद के झामरा का बाड़ीया निवासी एकलिंग गुर्जर पुत्र तेजमल गुर्जर ने डोली और बैलगाड़ी को आकर्षक ढंग से सजाकर ब्याह रचाने निकले थे जो 4 किलोमीटर दूरी स्थित कटार गांव की मीना देवी गुर्जर पिता तेज गुर्जर के घर पहुंची। जहां विधि विधान से तेज राम गुर्जर की पुत्री मीणा का विवाह संपन्न हुआ।

वर्तमान समय में अगर कोई यह कहे कि किसी की बारात बैलगाड़ी में जाएगी तो लोगों को विश्वास नहीं होगा कई वर्षों बाद पुरानी परंपरा से निकली बारात आज चर्चा का विषय बन गई है। बारात जिस गांव और चौराहे से निकली वहां लोग बरात को देखने के लिए अपने अपने घरों से बाहर निकल गए। बैल गाड़ियों को खींच रहे सभी बैलों के गले में घंटी बंदी थी जो शुभ बेला की घड़ी की याद दिला रही थी। दूल्हा एकलिंग गुर्जर ने बताया कि प्रदूषण से जन्मजोवन पर पड़ रहे प्रभाव को लेकर लोग जागरूक हो इसलिए मैंने पुरानी परंपरा को जीवित करने की पहल की है।



बैलगाड़ी में जाती बारात।



राशिफल

बुधवार 1 दिसम्बर, 2021

मार्गशीर्ष मास कृष्ण पक्ष, द्वादशी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत् 2078, चित्रा नक्षत्र सायं 6:47 तक, सौभाग्ययोग रात्रि 8:44 तक, कौशल करण दिन 12:55 तक, चन्द्रमा आज प्रातः 7:45 पर तुला

पंडित अनिल शर्मा राशि में प्रवेश करेंगे।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृश्चिक, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-तुला, बुध-वृश्चिक, गुरु-कुम्भ, शुक-धनु, शनि-मकर, राहु-वृष, केतु-वृश्चिक राशि में।

आज राजयोग सायं 6:47 तक है। श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:34 तक, शुभ 10:17 से 12:16 तक, चर 2:52 से 4:11 तक, लाभ 4:11 से सूर्यास्त तक। राहुकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 7:02, सूर्यास्त 5:29

मेघ
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बढ़ेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

वृष
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। मित्रों/रिश्तेदारों से चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। विवाहित मामलों से राहत मिल सकती है। नवीन कार्य संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा।

वृश्चिक
धार्मिक-मांगलिक कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। शुभ कार्य पर धन खर्च हो सकता है। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक यात्रा ठीक रहेगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

कर्क
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में आपसी वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा।

मकर
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। चलते कार्यों में प्रसिद्धि होगी। आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

सिंह
परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। विवाहित मामलों से राहत मिल सकती है।

कुंभ
अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। व्यावसायिक कार्यों में आगे अडचनें दूर होने लगेंगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

मीन
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। धन खर्च पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा।